श्लोक संख्या - 24 23 जुलाई 23/7/2020

"अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः॥"

हिन्दी अनुवाद -

हे अर्जुन! यह आत्मा अच्छेद्य (अविनाशी/अभेद्य), अदाह्य, अक्लेद्य तथा अशोष्य है।
इसके परिणामस्वरूप यह नित्य, व्यापक, स्थिर, अचल तथा सनातन है।

भावार्थ — (शाङ्करभाष्य के आधार पर)

उपस्थित श्लोक में आत्मा काटने, जलाने, गलाने तथा सुखाने के अयोग्य होने से क्रमशः अच्छेद्य, अदाह्य, अक्लेद्य तथा अशोष्य है।
पृथिवी, जल, अग्नि तथा वायु ये चारों भूत आपस में एकदूसरे के नाश के हेतु (कारण) हैं।

(क) पृथिवी का जल में लय होता है। इसप्रकार पृथिवी को विनष्ट करनेवाला कारण (हेतु) जल है।

(ख) जल का तेज में लय होता है। इसप्रकार तेज जल को नष्ट करने का हेतु है।

(ग) तेज का वायु में लय होता है। अतएव वायु तेज को समाप्त करने का हेतु है।

(घ) वायु का आकाश में लय होता है। इसप्रकार आकाश वायु को नष्ट करनेवाला हेतु है।

हमारे सामने यह परिलक्षित होता है कि सकल भूत आपस में एक दूसरे को नष्ट करते हैं। किन्तु ये सभी भूत आत्मा को नष्ट नहीं कर सकते। कारण कि आत्मा नित्य है। आत्मा नित्य होने के कारण सर्वव्यापक है।

23 जुलाई

आत्मा सर्वव्यापक होने के कारण स्थाणु के समान स्थिर होता है। स्थिर होने के कारण आत्मा अचल है। इसप्रकार आत्मा सनातन है। आत्मा किसी भी कारण (हेतु) से उत्पन्न न होने से नूतन नहीं है।

हालाँकि "न जायते म्रियते वा कदाचित्"

श्लोक द्वारा आत्मा के नित्यत्व तथा अविक्रित्व का प्रतिपादन कियाजाचुका है। किन्तु आत्मतत्त्व गूढ़ तथा कठिन है। भगवान् श्रीकृष्ण आत्मतत्त्व का बारम्बार निरूपण करते हैं ताकि आत्मतत्व संसारी जीवों की बुद्धि का विषय बनकर उन्हें मोक्ष का ज्ञान प्रदान करे।